ये अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

27-10-2026

योगी जीवन की ऊंची मंजिल को प्राप्त करने वाली आत्मा निंदा को स्तुति में, ग्लानि को गायन में, ठुकराने को सत्कार में अपमान को स्व-अभिमान में अपकार को उपकार में परिवर्तित कर बाप समान सदा विजयी, अष्ट रत्न और भक्तों के इष्ट बनो। यह भावना नहीं रखो कि यह भी तो कुछ बदले, तो मैं बदलूं यह लेने की भावना है। मुझे बायब्रेशन देना है। मुझे रहमदिल बनना है। मुझे गुणों का, शक्तियों का सहयोग देना है, इसमें मास्टर दाता, फ्राकदिल बनो।

Embrace the spirit of uplifting others and uplift those who have defamed you.

A soul who is going to reach the highest destination of a yogi life will transform slander into praise, rejection into respect, an insult into self-confidence, defamation into upliftment and remain constantly victorious. Such a soul will be equal to the Father, one of the eight jewels and a special deity of the devotees. Do not have any feeling of "When that one changes a little, I will then change." This is the feeling of taking. "I have to give vibrations. I have to be merciful. I have to give the co-operation of virtues and powers." Become a master bestower in this; be generous hearted.